अक्रम यूथ

अक्टूबर 2020 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ 20

रामायण फोर यूथ

भाग - 1

अनुक्रमणिका

4 भरत की अधीनता

6 ज्ञानी सायन्टिफिक सॉल्यूशन

8 दादाश्री के पुस्तक की झलक

10 यूथ एक्सपीरियन्स

12 ज्ञानी विद् यूथ

14 महान पुरुष की झाँकी

17 ज्ञानी आश्चर्य की प्रतिमा

18 ज्ञान प्राप्त करें विनय से

20 एक्सपेरीमेन्ट

23 #कविता

अक्टूबर 2020
वर्ष : 8, अंक : 6
अखंड क्रमांक : 90

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता
Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn
in favour of "Mahavideh Foundation"
payable at Ahmedabad.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्यारे मित्रों,

हमारे दो पौराणिक महाकाव्य, रामायण एवं महाभारत से तो आप सब परिचित ही हैं। इन दोनों ग्रंथों पर सालों पहले बनाए गए धारावाहिकों का दूरदर्शन पर पुनः प्रसारण किया गया और वह भी इस लॉकडाउन के प्रारंभिक दिनों में। जिसका लगभग सभी ने बड़े चाव से आनंद लिया होगा। लेकिन इन महान कथाओं को सिर्फ मनोरंजन के हेतु से मज़ा लेकर फिर उसे भूल जाने की गलती नहीं करनी चाहिए। इन कथाओं और उनके पात्रों का यदि बारीकी से अभ्यास करें तो पता चलेगा कि ये कथाएँ हमें सही समझ देती हैं कि एक आदर्श जीवन जीने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए और क्या-क्या नहीं करना चाहिए। साथ ही व्यवहार के उत्कृष्ट गुण जैसे कि आज्ञा में रहना, अधीनता, धैर्य, संयम, प्रेम, भक्ति वगैरह की झलक भी इन ग्रंथों में दिखाई देती है।

अक्रम यूथ के इस अंक में, रामायण के महान पात्रों और उनके जीवन के कुछ प्रसंगों को याद करके उनसे प्रेरणा लेकर हम भी एक आदर्श जीवन जीने का ध्येय मजबूत करें।
तो चलिए, सब तैयार हैं न???

जय सच्चिदानंद...
फिर मिलेंगे, अगले महिने...

***ध्यान दें:** इस अंक में प्रस्तुत किए गए रामायण के प्रसंग विविध शास्त्रों, ग्रंथों और अन्य माध्यमों में उपलब्ध जानकारियों के आधार पर संकलित किए गए हैं। जिसका एकमात्र उद्देश्य कि आज के युवा वर्ग इससे योग्य मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें, इतना ही है।

भरत की अधीनता

जहाँ अधीनता की बात आती है वहाँ श्रीराम के अनुज भरत जी को अवश्य याद किया जाता है। क्यों? चलो, देखें कि भरत जी ने ऐसा तो क्या किया था कि 'अधीनता' शब्द के प्रतीक बन गए।

ननिहाल से लौटकर भरत अपने प्रिय बड़े भाई श्रीराम के वन की तरफ प्रयाण के समाचार सुनकर बहुत दुःखी हो गए। श्रीराम अयोध्या वापस लौट आए और वे ही अयोध्या के राजा बनें, ऐसा समझाने वे तुरंत ही गुरु वशिष्ठ और जनक राजा के साथ वन में गए। सब ने मिलकर बहुत विनती की लेकिन पिता के द्वारा दी गई आज्ञा पालन के प्रति श्रीराम हृदय से बँधे हुए थे। परम विनय से श्रीराम का अनुसरण करने वाले भरत को उनकी प्रतिज्ञा को स्वीकारना पड़ा। साथ ही श्रीराम ने १४ वर्ष के लिए अयोध्या का राज्य और उसकी प्रजा को संभालने की ज़िम्मेदारी भरत को सौंप दी। विदाई के समय भरत ने कहा, 'आप मुझे निशानी के तौर पर कुछ दें जिसका अवलंबन लेकर मैं अयोध्या में चौदह वर्ष तक आपके द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी निभा सकूँ।' श्रीरामचंद्र जी ने कृपा करके अपनी चरण पादुकाएँ भरत जी को दी। प्रसन्न होकर प्रेम से उन पादुकाओं को अपने मस्तक से लगाकर भरत उनके चरणों में प्रणाम करके विदा हुए।

अयोध्या लौटकर शुभ मुहुर्त देखकर भरत ने राज्य सिंहासन पर श्रीराम के प्रतीक रूपी उनकी पादुकाओं को रखा और राम के आदेश अनुसार राज्य संभाला।

धीर और धर्म परायण भरत जी, 'खुद के स्वामी राम, वन के दुःख झेल रहे हैं तो मैं महल के सुख कैसे भोग सकता हूँ?' अतः श्रीराम की चरण पादुका का आशीर्वाद लेकर नंदीग्राम में कुटिया बनाकर वे सादगी भरा जीवन जीने लगे। वे राम को हमेशा पूज्य मानते थे और खुद का दर्जा उनसे नीचा रखने के उद्देश्य से उन्होंने ज़मीन में गड्ढा खोदकर सूखे घास का बिछौना बनाया। खाना, पहनावा वगैरह में वे ऋषियों के कठिन व्रत और नियमानुसार रहने लगे।

अन्य सभी भोग, आभूषण, वस्त्र एवं सुखों को मन-वचन-काया से आसानी से त्याग दिया। उन्हें अयोध्या के बड़े राज्य पर या धन के ढ़ेर पर किसी प्रकार का राग नहीं था। तप के कारण उनका शरीर दुर्बल होने लगा, लेकिन उनके मुख की कांति बढ़ने लगी। हृदय में अत्यंत प्रेम के साथ वे नित्य श्रीरामचंद्र जी की पादुकाओं का पूजन करते और उन पादुकाओं को वंदन करके, आशीर्वाद लेकर राज्य के काम करते रहे। उनके हृदय में राम, मुँह में राम-नाम एवं नेत्रों में विरह के अश्रु रहते थे। उनके व्रत एवं नियमों की बात सुनकर साधु-संतों को भी संकोच होता था और भरत जी की ऐसी दिव्य और तेजस्वी दशा देखकर मुनिराजों को भी लज्ज़ा आती थी।

इस प्रकार, भरत ने नंदीग्राम में राजपाट के किसी भी वैभव के बगैर निरंतर 14 वर्ष श्रीराम के संपूर्ण विनय भाव एवं अधीनता में रहकर ऐसी सुंदर ज़िम्मेदारी निभाई की नगरवासी यहाँ तक कहने लगे, "भरत जी हर प्रकार से प्रशंसा के लायक हैं।" आज भी अधीनता और विनय भाव के लिए भरत के भातृ प्रेम को याद किया जाता है..।

तो चलो, हम देखें कि अधीनता के बारे में पूज्यश्री का क्या कहना है...

ज्ञानी सायन्टिफिक सॉल्यूशन

प्रश्नकर्ता : अभी लॉकडाउन में टी.वी. पर रामायण देखा, तो चौदह वर्ष तक भरत राजा ने राम भगवान के अधीन रहकर राज किया। तो उनमें अधीनता, प्रेम एवं सहजता सब दिखाई दिया। इसी तरह दादा और नीरू माँ के प्रति आपकी भी अधीनता थी, तो अधीनता से क्या फायदा मिलता है?

पूज्यश्री : अधीनता का फायदा यह है कि स्वच्छंदता नहीं रहती। अधीनता यानी आज्ञा का पालन करना इससे उनकी कृपा से फिर आगे की प्रगति होती है, मोक्ष तक का काम हो जाता है। अधीनता तो सर्वस्व कल्याण कर देती है। मैं महत्वपूर्ण हूँ, मुझे कुछ कहे ऐसा कोई नहीं चाहिए, मैं अपनी तरह से जीऊँगा। "आई वॉन्ट टू लिव माइ लाइफ।" अरे! तो भटकना पड़ेगा, इसे स्वच्छंदता कहते हैं, भटकना पड़ता है। और वह तो अधीनता कहलाती है कि आप जैसा कहें वैसा, आपके कहे अनुसार मैं करूँगा, तो फिर वे तो हमारा भला ही करेंगे, कल्याण कर देते हैं। समझ में आया न? अतः अधीनता तो मुख्य चीज़ है। इसलिए MBA में आते हैं सब, फिर अधीन रहना चाहते हैं कि इस अधीनता में रहने से हमारे ब्रह्मचर्य का भी पालन हो, हम ज्ञान में प्रगति करें और मन-वचन-काया से जगत् का कल्याण कर सकें लेकिन यदि अधीनता में रहेगा तो कर पाएगा। मैं अपने-आप ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा, अपने आप सत्संग में आऊँगा, मैं खुद ही सब संभाल लूँगा, समझ लूँगा, मैं अपनी तरह से आज्ञा का पालन करूँगा, तो ऐसे अपनी तरह से पालन करेगा तो कहाँ खो जाएगा कोई भरोसा नहीं। क्योंकि खुद मार्ग से अनजान है, अधीनता के बगैर, अगर यहाँ से सिर्फ स्टेशन तक भी जाना हो, और मार्ग पता न हो तो अधीनता रखनी पड़ती है। ऐरपोर्ट जाना हो तो कोई ठीक से जानने वाला होगा तो पहुँचा देगा, वर्ना हम भटक जाएँगे, समझ में आया न? अधीनता यानी बहुत बड़ी चीज़ है, अगर गुरु के अधीन रहें न, तो गुरु का जो भी हो लेकिन अपना कल्याण हो जाता है। अधीनता का इतना बड़ा फायदा है। दादा भगवान, नीरू माँ, ये सब तो ज्ञानी पुरुष कहलाते हैं, अतः उनके अधीन यानी सर्वस्व मोक्ष तक का कल्याण हो जाएगा, गारन्टी। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आया। भरत राजा को उससे क्या फ़ायदा हुआ था, अधीनता रखने से?

पूज्यश्री : हाँ, यानी उससे तो मोक्ष के लिए आगे की लिंक पूर्ण हो जाएगी। और फिर भी वे सारी जिंदगी, यह तो चौदह ही वर्ष लेकिन फिर बाद में भी सारी जिंदगी अधीन ही रहे हैं, ऐसा होना चाहिए। एक दिन रहें उसका कोई मतलब नहीं है, सारी जिंदगी रहना चाहिए।

Dada Bhagwan

App For Android & iOS

SCHEDULE

AUDIOS

BOOKS

CONTACT

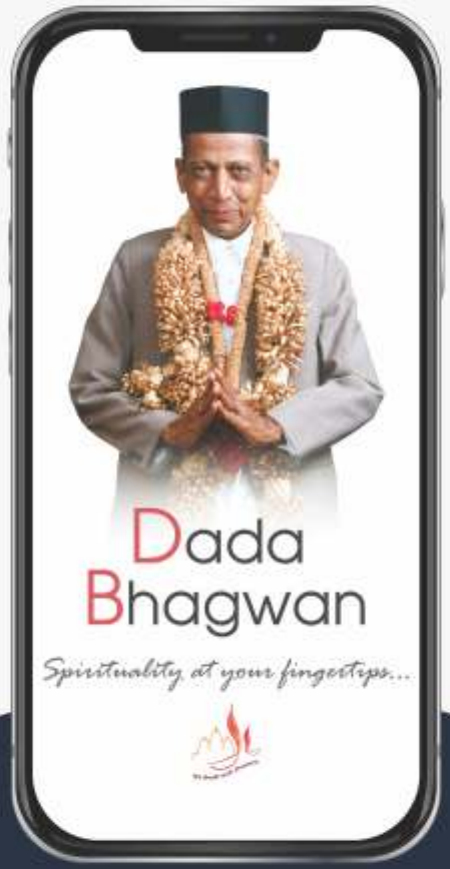

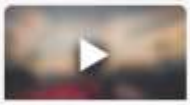

VIDEOS

MAGAZINES

GALLERY

SADHANA

दादाश्री के पुस्तक की झलक

प्रश्नकर्ता : कोई आत्महत्या करके मर जाए तो क्या होता है?

दादाश्री : भले ही आत्महत्या करके मर जाए लेकिन वापस फिर यहीं पर कर्ज़ चुकाने आना पड़ेगा। इंसान है तो उसके जीवन में दुःख तो आएँगे ही, लेकिन उसके लिए क्या आत्महत्या करनी चाहिए? आत्महत्या के फल बहुत कड़वे हैं। भगवान ने उसके लिए मना किया है, बहुत खराब फल आते हैं। आत्महत्या करने का तो विचार भी नहीं करना चाहिए। यदि कुछ भी कर्ज़ हो तो वह वापस दे देने की भावना करनी चाहिए, लेकिन आत्महत्या नहीं करनी चाहिए।

दुःख तो रामचंद्रजी को था। उनके चौदह साल के वनवास के एक दिन का दुःख, वह इस चिडियाँ (कमज़ोर इंसानों) की पूरी ज़िंदगी के दुःख के बराबर है! लेकिन अभागे 'चें-चें' करके सारा दिन दुःख गाते रहते हैं।

सुख-दुःख तो निमंत्रित महेमानों जैसे हैं, आएँ तब धक्का नहीं मार सकते बल्कि उनका तो सत्कार करना चाहिए। संसार, वह दुःख का सागर है। व्यवहार अच्छी तरह चलाने में किसी का डर नहीं होना चाहिए। धौल खाना पसंद नहीं हो, और यदि बहीखाता बंद करना हो तो धौल देते समय सोचना कि वापस आएगी, तब वह सहन की जा सकेगी या नहीं?

तीन प्रकार के दुःख हैं। देह के दुःखों को 'कष्ट' कहते हैं, जिसे प्रत्यक्ष दुःख कहते हैं। दाढ़ दुःखे, आँखें दुःखें या पक्षाघात हो जाए तो वे सभी दुःख, वे देह के दुःख हैं। दूसरे हैं वाणी के दुःख, उन्हें 'घाव' कहते हैं। हृदय में घुस जाएँ तो फिर जाते नहीं। और तीसरे मन के दुःख, वे 'दुःख' कहलाते हैं। अपने को मन के दुःख या वाणी के घाव नही रहने चाहिए, लेकिन कष्ट तो आएँगे। जो भी सहन करना पड़ता है, वह सब कष्ट ही कहलाता है। लेकिन हमें ज्ञाता-दृष्टा पद में रहकर सहन करना चाहिए। लेकिन ये वाणी के घाव और मन के दुःख नहीं होने चाहिए। ये इन्कम टैक्स के ऑफिसर कहें कि 'आपके ऊपर इतना टैक्स लगा देंगे,' ऐसा बोलें तो वह तो टैप रिकॉर्ड है। इसलिए उस वाणी का घाव हमें नहीं लगना चाहिए।

वनवास के दुःखों का वर्णन

★ काँटों वाले और उबड़-खाबड़ रास्तों पर चलना पड़ता है।

★ ज़हरीले साँप, बिच्छू वगैरह जीव-जंतु एवं जंगली जानवरों के भय के साथ दिन-रात जीना पड़ता है।

★ पत्थर पर, ज़मीन पर सोना पड़ता है।

★ जैसा खाना-पीना मिले उससे चलाना पड़ता है और यदि न मिले तो कई दिनों तक भूखा-प्यासा रहना पड़ता है।

★ मैले-फटे हुए कपड़े बदले बगैर और स्नान किए बिना कई दिन बिताने पड़ते हैं।

★ किसी भी प्रकार की शारीरिक तकलीफ़ आए तो इलाज़ नहीं हो पाता पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

★ राक्षसों द्वारा चोरी, लूटपाट, अपहरण, जबरदस्ती और हत्या की आशंकओं के बीच जीना पड़ता है।

★ रास्ता भूल गए तो भटकना पड़ता है, अन्य प्रकार से भी स्वजनों का वियोग सहना पड़ता है।

पूज्यश्री हमारे

जाम्बवंतजी

यूथ एक्सपीरियन्स

लॉकडाउन के शुरुआती दौर में मेरा समय टी.वी. पर आने वाली सीरियल 'रामायण' देखकर बीतता था। जिसमें नीचे दी गई घटना द्वारा मुझे पूज्यश्री (ज्ञानी पुरुष) के प्रति बहुत अहो भाव प्रकट हुआ।

जब सीता जी की खोज में जांबवंत और हनुमान जी वानर सेना की टुकड़ी के साथ बहुत परिश्रम के बाद भारत के दक्षिणी छोर में स्थित समुद्र तट पर पहुँचे तब उन्हें पता चला कि सीता जी तो समुद्र के उस पार लंका नगरी में हैं। तब उनके अंदर समुद्र की लहरों से भी विशाल निराशा

की लहर दौड़ गई। इतना विशाल समुद्र लांघ कर उस पार जाना संभव ही नहीं लग रहा था। जब किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था तब जांबवंत को एक रहस्य बताने का यह उचित समय लगा। वे परेशान हनुमान जी के पास जाते हैं। हनुमान जी को उनके पुराने प्रसंग याद दिलाते हैं कि बचपन में उन्होंने अपनी असीम शक्ति से कैसे-कैसे पराक्रम किए थे। लेकिन इसके साथ ही शरारत करके शक्ति का दुरुपयोग भी किया था, इस वजह से एक ऋषि ने क्रोधित होकर उन्हें श्राप दिया था कि, 'हनुमान जी अपनी शक्तियाँ भूल जाएँगे और उचित प्रसंग पर जब कोई उन्हें इन शक्तियों की याद दिलाएगा तब वे शक्तियाँ वापस प्रकट होंगी।'

यों जांबवंत ने हनुमान जी को उनकी शक्तियाँ याद दिलाई और फिर हनुमान जी ने छलांग लगाकर पूरा समुद्र पार किया और लंका पहुँचकर अन्य कैसे-कैसे पराक्रम किए थे वह हम सब जानते हैं।

यह पूरा एपिसोड देखने के बाद मुझे भी ऐसा लगा कि पूज्यश्री (ज्ञानी पुरुष) भी हमें ज्ञानविधि के प्रयोग द्वारा बताते हैं कि वास्तव में हम आत्मा हैं। हमारी अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन वगैरह शक्तियाँ कैसी हैं उनका भान करवाकर अनंत जन्मों के बंधन में से छुड़वाते हैं और संसार समुद्र पार करवाकर मोक्ष दिलाते हैं।

- ऋत्विज पटेल

ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता :

दशहरा के दिन रावण के पुतले क्यों जलाए जाते हैं, क्या यह उचित है?

नीरू माँ : एक बार हम किसी रास्ते से गुजर रहे थे, तो लोगों ने कहा कि आज यहाँ से रावण के पुतले को ले जाया जाएगा इसलिए यह रास्ता बंद है। दशहरा के दिन कई लोग रावण के पुतले जलाते हैं, लेकिन रावण तो महान थे, ज्ञानी थे। और जैन शास्त्रों के अनुसार तो वे भविष्य में तीर्थंकर बनकर मोक्ष प्राप्त करेंगे और करोड़ों लोगों को भी मोक्ष में ले जाएँगे। उस जन्म में सीता जी का जीव भी उनका पट्ट शिष्य बनेगा। भले ही यह शास्त्र में कही हुई बात है, लेकिन हम इसे स्वीकार करेंगे। रामायण भी रावण को महान मानते हुए कहते है - "रावण शास्त्र वेत्ता, नौ ग्रह निकट में रहते।" ऐसा तो किसी के लिए भी नहीं कहा गया है, सिर्फ रावण के लिए कहा गया है। फिर भी लोग उनके पुतले जलाते हैं। ज्ञानियों के पुतले जलाएँगे तो हिन्दुस्तान की हालत कैसी हो

जाएगी? रावण जैसे भी थे, लेकिन महान थे, ज्ञानी थे। रावण, सीता जी ये सभी मोक्ष मार्ग के राही थे। उन्होंने सीता जी पर दृष्टि नहीं बिगाड़ी थी, उनका कुछ बुरा नहीं किया था। सिर्फ पिछले जन्म के कर्म का फल आया, जो उन्हें विवश होकर पूरा करना पड़ा। उन्होंने कुदृष्टि से नहीं बल्कि अहंकार से सीता जी का हरण किया था।

आज तो हमें रावण को ज्ञानी के तौर पर याद करके नमस्कार करना चाहिए।

शबरी

महान पुरुष की झाँकी

हमारे शास्त्रों में महातपस्वीनियों में माता शबरी का नाम सबसे आगे है। श्रीराम के सच्चे अनन्य भक्त के तौर पर उन्हें बहुत ख्याति मिली है। जन्म से वे भील जाति की थीं। ज्ञान और धर्म के गूढ़ अर्थ जानने की उनमें अनुठी लगन थी।

ऋषिमुख पर्वत की तलहटी में मातंग ऋषि को मिलकर उन्होंने सालों तक ऋषि की भक्तिभाव से सेवा की। सालों तक सेवा, समर्पण, भक्ति और साधना की। मातंग ऋषि जब परमधाम सिधारने लगे तब शबरी ने भी उनके साथ जाने की इच्छा व्यक्त की। ऋषि ने कहा, 'तू यहीं रह क्योंकि हमारे प्रभु श्रीरामचंद्र जी उनके वनवास के दौरान यहाँ पधारेंगे और उनके दुर्लभ दर्शन और कृपा तुझे मिलेगी।' गुरु की आज्ञा अनुसार वे आश्रम में रहीं और हर रोज़ अनन्य भक्ति से श्रीराम के आगमन की सालों तक आतुरता से राह देखती रहीं।

सालों बाद एक दिन प्रभु श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण के साथ वृद्धा शबरी की झोपड़ी में आए तब आनंद विभोर हो कर माता शबरी प्रभु राम के चरणों में गिर कर हर्ष से रो पड़ीं।

आइए उनका प्रेमभरा वार्तालाप सुनें...

सालों से मैं हररोज़ आपके लिए बेर लेने जाती हूँ और चखकर रखती हूँ। मीठे-मीठे बेर! खाइए प्रभु। खाइए प्रभु, बहुत ही मीठे हैं, मैनें खुद चख-चख कर रखे हैं।

शबरी के चखे हुए बेर खाकर राम कहते हैं...

सालों बाद मुझे लग रहा है कि मेरी माता कौशल्या मुझे अपने हाथों से खिला रही हैं। ऐसे मीठे फल तो भगवान को स्वर्ग में भी नहीं मिलेंगे!

जैसा अनन्य प्रेम और भक्तिभाव माता शबरी को श्रीराम भगवान के प्रति था वैसा ही प्रेम और भाव हमें भी प्रत्यक्ष ज्ञानी के प्रति रहे!!

नवधा भक्ति

भगवान राम
शबरी को नौ प्रकार की भक्ति समझाए :

1. संतों का सत्संग करना।
2. भगवान से संबंधित दंतकथाएँ - प्रवचनों में रुचि रखना।
3. अहंकार छोड़कर गुरु के चरणकमल की निःस्वार्थ सेवा करना।
4. दगा, कपट और दंभ छोड़कर भगवान के गुणों की हृदय से प्रशंसा करना।
5. वेदानुसार दृढ़ विश्वास से प्रभु के नाम - मंत्रों का जाप करना।
6. संयम, शील, विविध कर्मों में वैराग्य और सज्जनों के धर्मकार्य में रुचि रखना।
7. जगत् को भगवान स्वरूप से देखना चाहिए। संत भगवान तक पहुँचने का रास्ता बताते हैं, अतः संतों को भगवान से भी ज्यादा महत्व देना।
8. किसी भी प्रकार की इच्छा किए बगैर जो कुछ भी मिले उसी में संतोष रखना चाहिए और सपने में भी दूसरों का दोष नहीं देखना।
9. दंभ, कपट छोड़कर सरल बनना चाहिए। भगवान पर दृढ़ विश्वास रखना चाहिए, मन में हर्ष या शोक नहीं रखना।

ज्ञानी आश्चर्य की प्रतीमा

ज्ञानी पुरुष के प्रति नवधा भक्ति!

विविध प्रसंगों में नीरू माँ की नवधा भक्ति सहित सेवा के बारे में दादाश्री ने जो बातें कही हैं उनमें से कुछ वाक्य यहाँ संकलित किए हैं।

§ तीन साल से नीरू बेन एक-एक सेकंड साथ में रहते हैं। मतभेद ही नहीं। मतभेद की तो बात छोड़ो, ऊँची आवाज़ से बात तक नहीं हैं। यह जो सेवाभाव उत्पन्न हुआ है, ऐसा इनमें से किसी को हुआ है? यह तो ज़बरदस्त पुण्य से...

§ यह ज़बरदस्त नवधा भक्ति उत्पन्न हुई है और नीरू में ज़बरदस्त अर्पणता भाव उप्पन्न हुआ है। अर्पणता बहुत अच्छी रहे तो ज़बरदस्त फल मिलता है।

§ (नीरू माँ को संबोधित करके) आपको हमारी सेवा करने मिली है वह बहुत बड़ा पुण्य है। यह किसी को नहीं मिली है।

§ हमारी सेवा और जगत् कल्याण का भाव, बस इतना ही आपको (नीरू माँ को) करने जैसा है। इसमें सब कुछ आ जाता है।

§ (सात दिन तक दादाश्री की सेवा करने का लाभ नीरू माँ को मिली थी। तब दादाश्री ने कहा था।) ऐसा मौका किसी को नहीं मिलता है, वह आपको (नीरू माँ को) मिला है। मुझे खुद भी आश्चर्य हुआ। सात दिन निरंतर हमारे सानिध्य में रहे, सेवा में रहे तो काम बन जाता है और ज्ञान एक्ज़ेक्टनेस में आ जाता है। यह देखा मैंनें आपका। सुसंयोगों का ऐसा दबाव किसी को आता ही नहीं न!

§ उन्हें (नीरू माँ को) दादा की सेवा करके पूर्णाहुति कर लेनी है, वह हो जाएगी। ये सात दिन का अनोखा लाभ उन्हें मिला है। शास्त्र पढ़ते रहने से, सुनते रहने से पूर्णदशा तक नहीं पहुँचा जाता है। वह तो सेवा से ही होता है। मौन सेवा से ही होता है। कुछ भी पूछने की ज़रूरत ही नहीं रहती।

ज्ञान प्राप्त करें विनय से

प्रभु श्रीराम का तीर जाकर रावण की नाभी में लगा। रावण धराशायी हो गए। अपने अंतिम श्वास गिन रहे थे। श्रीराम की सेना में उत्सव मनाया जा रहा था। रावण की मृत्यु करीब थी। श्रीराम ने लक्ष्मण को बुलाकर कहा कि, "एक काम जल्दी से पूरा करना पड़ेगा।" लक्ष्मण ने पूछा, "ऐसा, क्या काम है? आज्ञा दीजिए।"

श्रीराम ने कहा कि, "आप जल्दी से रावण के पास पहुँच जाओ वे महाज्ञानी हैं। उनसे ज्ञान प्राप्त करो। क्योंकि यदि उनकी मृत्यु हो गई तो उनका ज्ञान और अनुभव उनके साथ ही लुप्त हो जाएगा।" यह सुनते ही लक्ष्मण ने हँसते हुए बड़े भाई से कहा, "भैया रावण, जो कि घमंडी, अहंकारी है, जिसने भाभी का अपहरण किया था, उस रावण से आप ज्ञान प्राप्त करने के लिए कह रहे हैं?" श्रीराम ने कहा, "यह मेरा आदेश है।" लक्ष्मण का मन न होते हुए भी भाई के आदेश को सिर आँखों पर रखकर वे रावण के सिर के पास जाकर खड़े हो गए और रावण से कहा, "हे रावण! भैया ने मुझे यहाँ भेजा है ताकि तुम्हारे अंतिम समय में, मृत्यु से पहले तुम्हारा ज्ञान देकर जाओ।" लक्ष्मण के लहज़े में जो अनादर था, जो गुस्सा था, वह रावण को पसंद

नहीं आया। रावण ने सिर फेर लिया। यह देखकर लक्ष्मण को गुस्सा आ गया। वे वापस श्रीराम के पास आ गए और कहा, "भैया, मैनें पहले ही कहा था, वह घमंडी, अहंकारी है। उससे क्या ज्ञान मिलेगा?"

तब श्रीराम ने पूछा, "तुम कहाँ खड़े थे?"

लक्ष्मण ने कहा, "उसका अंतिम समय चल रहा है। वह कुछ कहेगा और मुझे सुनाई नहीं देगा, यह सोचकर मैं उसके सिर के पास खड़ा था।"

कुछ भी कहे बगैर श्रीराम खुद जाकर रावण के चरणों के पास बैठ गए। उन्हें नमस्कार कर के कहा, "हे लंकापति रावण! आप महाज्ञानी हैं लेकिन आपसे एक गलती हो गई थी, आपने मेरी पत्नी का अपहरण किया। उसकी सज़ा आपको मिली है। आपके पास बहुत ज्ञान है, तो जाने से पहले इस संसार के काम आए ऐसी कुछ बातें कहकर जाइए।" रावण ने कहा, "मुझे बहुत अच्छा लगा कि आपने अपने भाई को समझा दिया कि संस्कार क्या चीज़ है, अनुशासन क्या चीज़ है। " फिर रावण ने अपने जीवन का अनुभव राम-लक्ष्मण को सुनाया।

"गुरु के पास यदि ज्ञान लेने जा रहें हों तो सिर के पास खड़े नहीं होना चाहिए, पैरों के पास बैठना चाहिए।"

इस तरह, ज्ञानी से ज्ञान ग्रहण करने का श्रेष्ठ तरीका यही है कि सिर्फ शारीरिक तौर पर ही नहीं बल्कि हर तरह से लघु हो जाना।

ज्ञानी की ज्ञानकृपा

पाने के लिए विनयभाव अति आवश्यक है।

एक्सपेरिमेन्ट

चलो, इस बारे में आगे देखें एक साइन्टिफिक एक्सपेरीमेन्ट द्वारा।

प्रयोग के लिए सामग्री :

1 बड़ी बाल्टी पानी

1 प्लास्टिक का गिलास

तरीका :

1. बड़ी बाल्टी में पानी भरें।

2. पानी से भरी हुई बाल्टी में प्लास्टीक के गिलास को निम्नानुसार डालें।

1) सीधा रखकर डालें।

2) तिरछा रखकर डालें।

निरीक्षण & निष्कर्ष :

सीधा गिलास 10 मिनट तक पड़ा रहे तो भी गिलास में पानी नहीं भरेगा, जबकि तिरछे रखे गए गिलास में पानी भर जाएगा।

अध्यात्मिक विज्ञान :

सद्गुरु के पास, ज्ञानी के पास हमें झुकना पड़ता है, तभी उनका ज्ञान रूपी पानी हमारे अंदर भर पाएगा। जो झुकता है वह सबको अच्छा लगता है और जो अकड़ कर चलता है वह जगत् में भटकता है।

An Online Event

FUZION 2020

for Youth (13 to 21 years)

Bhaio
17, 18, 19
November

Behno
20, 21, 22
November

For Registration
Visit : youth.dadabhagwan.org

#कविता

एक विराट कथा है, भारत की भव्यता है,
देखिए रामायण, वह संस्कारों की सरिता है।

पुरुषोत्तम, श्रीराम की महानता है,
निस्वार्थ प्रेमी, भरत की अधीनता है।

भक्ति से भरा हुआ, शबरी के बेर का स्वाद है,
शिरोधार्य गुरु की आज्ञा, मानो प्रसाद है।

चिर सेवक की, स्वामी के प्रति अन्यय भक्ति है,
परम विनय से सुशोभित, महाबली की शक्ति है।

सदात्व से लेकर, आत्मभाव तक की गाथा है,
श्री राम करें वंदन रावण को, अलौकिक **लघुता** है।

मोक्ष में गए श्रीराम, वहाँ जाने की यह बात है,
सेतु बाँधे भवसागर पर, जो ज्ञानी साक्षात हैं।

अक्टूबर 2020
वर्ष : 8, अंक : 6
अखंड क्रमांक : 90

वशिष्ठ मुनिः हे राम! आप दशरथ के पुत्र नहीं हैं, अयोध्या के राजा नहीं हैं, आप सीता के पति नहीं है, आप तो ब्रह्म हैं, आप ही परब्रह्म हैं।

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.